AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

स्वतंत्रता संग्राम में बस्तर के जनजातियों का योगदान

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. सियालाल नाग
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान अध्ययनशाला
शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय
बस्तर, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल बड़े नेताओं और शहरी आंदोलनों तक सीमित नहीं था। इसमें भारतीय गांवों, वनवासियों और आदिवासियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसमें छत्तीसगढ़ का दक्षिणी भाग बस्तर, जो कि राज्य का एक प्रमुख आदिवासी क्षेत्र है। जिसमें लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। बस्तर की प्राकृतिक सुंदरता और प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर बस्तर, जहाँ पर झुकते हुए पहाड़, लहराते हुए दूर–दूर तक विस्तीर्ण हरीतिमा वाले बांस के वन, तेज गर्जन करते हुए, रमणीय जलप्रपात, तो कहीं पर चौकोर चबूतरो का आभास कराती हुई ऊँची–नीची पहाडियों का समूह, कुल मिलाकर दंतेश्वरी के वस्त्र का प्रतीक– ऐसे मिले–जुले सौन्दर्य से परिपूण दृश्य हैं। ऐसे बस्तर के आदिवासी इस संघर्ष में अहम भूमिका निभाई। बस्तर शांत सरल प्रकृति पुत्रों की अरण्यस्थली रही है, इस प्राकृतिक धरा के निवासियों की असिमता पर जब प्रहार हुआ है, तो स्थिति विस्फोटक रही है, साथ ही एक विशेष तथ्य यह भी आदिवासी जन की भावनाएं अपने देवी–देवताओं और राजाओं व मृतात्माओं के प्रति गहरी आस्थाबध्द भी रही है। यहां के जनजातीय समुदायों ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ न केवल अपनी भूमि, संसाधनों और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा की, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अमिट छाप छोड़ी। इस शोध पत्र का उद्देश्य बस्तर के जनजातीय द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में किए गए योगदान का गहन अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द

बस्तर के जनजातीय का योगदान, संघर्षों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव.

बस्तर जिले का सामान्य परिचय

प्राकृतिक सुदंरता और प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर बस्तर आँखों को सौंदर्य से तृप्त कर देने वाला बस्तर–जैसे अंचल शायद ही छत्तीसगढ़ में कोई अन्य हो। ऐसा बस्तर जहाँ की ऋतुएँ मोहक है, जिसकी पतझड़ सुनहली है, जिसके मानसून के महीनों की सुबहें ओस से ढ़ँकी हुई होती हैं, जिसके बसंत चित्रवर्णी हैं, जिसकी ग्रीष्म तन्द्रापूर्ण है, ऐसा बस्तर जहाँ बरसाती दिनों में बादल गर्जन–तर्जन के साथ झमाझम बरसते हैं, झरनों में और भी अधिक नवीनता और गति आ जाती है'–आकाश से बरसात मेघ बस्तर को आप्लावित कर देता है। यहॉ की वे ऋतुएँ जिनकी ताजगी भरी सुबहें अपने साथ सारे रंगों को लेकर प्रकट होती हैं, रहस्य का निर्माण करती हुई कोहरे में समूचे बस्तर को डुबोए रखती हैं। सारे वातावरण को आप्त–सा करता कुहासा, तो दोपहर को अलसायी हुई गर्मी

के दिनों ही दोपहरिया, जहाँ पशु–पक्षी कही छाँव की तलाश में, ठंडाई की आस में स्नेहासिक्त प्रकृति के हाथों हौले–हौले आराम की चाहत में थकान मिटाकर आश्रय पाते है। कुल मिलाकर हर मौसम की अपनी उपयोगिता है, अनुभूति है, जिसे कहीं और शायद ही खोजा जा सकता है। इसके लिए भाव नहीं अभिव्यक्ति की जरूरत होती है। इस अभिव्यक्ति को प्रकृति के परिवेश में ऋतुओं के रंगों के बीच उसके परिवर्तन को जैसे ऑख–मिचौनी के हो रहे खेल के माध्यम से समझना होता है। प्रकृति की ऐसी उन्मुक्त प्रतियोगिता जो बारहों महीने अनथक चलती रहती है, जिसे जरा भी विश्राम लेने की आवश्यकता नहीं होती और मानव ही नहीं बल्कि समूचे परिवेश को अपने–आप में डुबोए रखती है, जहाँ से मुक्त होना संभव ही नहीं है। यहॉ के समूचे दृश्य, यहॉ के पहाड़, नदी, नाले, झरने, घाटियॉ सब कुछ अनंत काल से हैं और आगे भी अनंत काल तक बनें रहेगे। कुल मिलाकर बस्तर प्राकृतिक और मानवीय प्रयासों का एक ऐसा संग्रहालय है, जो दूसरों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है और कराता होगा।

यह एक सामान्य धारणा है कि भूगोल और प्राकृतिक विशेषताएँ मानव के इतिहास की धारा को प्रभावित करती हैं। अतएव यह जरूरी है कि किसी अंचल के इतिहास का अध्ययन करने से पूर्व हम उसे अंचल के भूगोल को समझ लें। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में तो इतिहास पर यहाँ के भूगोल का व्यापक प्रभाव पड़ा है। उदाहरणार्थ है, एक ओर जहॉ यहॉ के मैदानी क्षेत्र में दर्जनों राजवंशों का उत्थान और पतन का साक्षी है। ऐसी स्थिति में हम यहॉ बस्तर के भूगोल की एक झलक से यह जानने का प्रयास करेंगे कि पहाड़ी क्षेत्र में विविध राजवंशों की जमावट में कौन–सी बाधाएँ थीं।

उच्च कुल के हिन्दु बस्तर में अपेक्षाकृत विरल ही थे और उड़ीसा से आकर बसने वाले ब्राहाण भी धार्मिक मामलों में अत्यधिक अंधविश्वासी थे। हिंदू तथा गोंड़ दोनों ही व्यावहारिक तौर पर वनों, पहाड़ियों, वृक्षों तथा भूमि की मृतात्माओं और देवियों की पूजा करते थे। दोनों ही दंतेश्वरी के बाद जगन्नाथ को अत्याधिक प्रतिष्ठा मिली हुई थी। उड़ीसा से बस्तर की संलग्नता और पुरूषोत्तम देव (1468–1534) की जगन्नाथ के प्रति प्रतिबद्धता के कारण जगन्नाथ के प्रति बस्तर में अतिरिक्त भक्तिभाव था और बस्तर में जगन्नाथ–संस्कृति का विकास हुआ।

छत्तीसगढ़ राज्य के बनने (1 नवम्बर, 2000) से पूर्व का बस्तर 17 46′उत्तरी 20′34′ उत्तरी अक्षांश और 80 15′ पूर्वी 82′1 (पूर्वी अक्षांश) दो प्राचीन 'फयूडेटरी स्टेट्स' (बस्तर और कांकेर) का प्रतिनिधित्व करता था। इन दोनों प्राचीन राज्यों का सम्मिलित क्षेत्र 39,176 वर्ग किलोमीटर था और 1981 ई. के जनगणना–प्रतिवेदन के आधार पर कुल जनसंख्या 18,40,449 थी। प्राचीन बस्तर–राज्य आज के छत्तीसगढ़ प्रदेश के धुर दक्षिण में था तथा चालुक्य–राजवंश के रिकार्डो के अनुसार उसका क्षेत्रफल 1,091 वर्ग मील था।

बस्तर, भारत के छत्तीसगढ़ प्रदेश के दक्षिण में स्थित जिला है। बस्तर जिले एवं बस्तर संभाग का मुख्यलय जगदलपुर शहर है। मध्यप्रदेश में जिला पुर्नगठन आयोग गठन 1983 में न्यायमूर्ति श्री बी.के.दुबे की अध्यक्षता में किया गया था। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट 11 नवंबर 1985 को सरकार को दी थी। आयोग की सिफारिशों के आधार पर 03 सितंबर 1992 को तत्कालीन सरकार ने 16 नये जिले गठन की घोषणा की ये जिले 1 नवम्बर 1992 से अस्तित्व में आने थे, किन्तु न्यायलय स्थगन आदेश पारित कर दिये जाने के कारण अस्तित्व में नहीं आ पाये थे। इन 16 जिलों में बस्तर जिले को विभाजित कर सन् 1998 में दन्तेवाड़ा व कांकेर को जिला बनाने की घोषणा की गई, छत्तीसगढ़ निर्माण के 7 वर्ष के बाद और बस्तर को विभाजित किया गया व 1 मई 2007 को 2 नवीन जिलों का गठन किया गया, नवीन जिले नारायणपुर व बीजपुर है और 15 अगस्त 2011 को कोण्डागाँव, व सुकमा को जिला बनाने की घोषणा किया गया। इस तरह बस्तर संभाग अभी वर्तमान में ये स्वतंत्र सात अलग–अलग जिले हो गये है। बस्तर जिला को सात ब्लाकों में विभाजित किया गया है जोकि इस प्रकार है–जगदलपुर, बस्तर, बकावण्ड़, बास्तानार, दरभा, लौहाण्ड़ीगुड़ा, तोकापाल, में विभाजित किया गया है जिसकी जनसंख्या सन् 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 8,33,318 है, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 6,91,934 तथा नगरीय जनसंख्या 1,35,384 है, इसमें पुरूष 4,12,981, तथा महिला 4,20,337 है।

बस्तर की जनसंख्या में 70 प्रतिशत जनजातीय समुदाय, जो छत्तीसगढ़ की कुल जनजातीय जनसंख्या का 26.76 प्रतिशत है, जैसे गोंड़, मारिया, मुरिया, भतरा, हल्बा, धुरूवा समुदाय हैं। बस्तर जिला सरल स्वाभाव जनजातीय

समुदाय और प्राकृतिक सम्पदा संपन्न हुए प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सुखद वातावरण का भी धनी है। बस्तर जिला घने जंगलों, ऊची, पहाड़ियों, झरनों, गुफाओं एवं वन्य प्राणियों से भरा हुआ है। बस्तर जिले के लोग दुर्लभ कलाकृति, उदार संस्कृति एवं सहज सरल स्वभाव के धनी है।

बस्तर, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

बस्तर क्षेत्र, जो छत्तीसगढ़ के दक्षिणी हिस्से में स्थित है, अपनी समृद्ध जनजातीय संस्कृति और इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। जनजातियों की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना उनकी स्वायत्तता और संघर्षशील प्रवृत्तियों को दर्शाती है। बस्तर का जनजातीय समाज प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से जंगलों, पर निर्भर था। ब्रिटिश साम्राज्य ने इन संसाधनों पर अपना अधिकार जमाने और आदिवासी समाज की स्वतंत्रता को दबाने के लिए कई उपाय किए, जिनके खिलाफ बस्तर के जनजातीय वीरों ने खुलकर संघर्ष किया।

बस्तर के जनजातीय वीरों का योगदान

- **परलकोट विद्रोह (1825)**: बस्तर रियासत के अंतर्गत परलकोट के जमींदार गेंद सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों और मराठों के विरूद्ध सशक्त विद्रोह जनवरी 1825 में प्रारम्भ हुआ। सम्पूर्ण माड़ क्षेत्र में विद्रोहग्नि झुलस रही थी। विद्रोह का निर्ममतापूर्वक दमन कर अंग्रेजी सत्ता ने 20 जनवरी 1825 को गैंदसिंह को उनके महल के सामने ही फांसी दे दी।
- **तारापुर विद्रोह (1842–1854)**: यह विद्रोह दलगंजन सिंह के नेतृत्व में मेजर विलियम्स के द्वारा कर वृद्धि के आदेश दिया गया था। इसी कारण दलगंजन सिंह के नेतृत्व में विद्रोह किया गया था। इसके बाद कर वृद्धि को वापस ले लिया गया था।
- **लिंगागिरी विद्रोह (1856)**: इसे बस्तर का मुक्ति संग्राम भी कहा जाता है। इसका नेतृत्व धुरवा राम माड़िया के द्वारा किया गया था। बस्तर को अंग्रेजी साम्राज्य में शामिल किये जाने के विरोध में किया गया था।
- **कोई विद्रोह (1859)**: यह विद्रोह नागुल दोरला के नेतृत्व में किया गया था। इस विद्रोह का कारण साल वृक्ष की कटाई को रोकने हेतु यह विद्रोह किया गया था।
- **मुड़िया विद्रोह (1876)**:. यहा विद्रोह झाड़ सिरहा के नेतृत्व में किया गया था। इस विद्रोह का कारण अंग्रेजों की आटोक्रेसी नीति एवं गोपीनाथ कपड़दार को दीवान बनाना था। इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह आम वृक्ष की टहनी थी। 2 मार्च 1876 को बस्तर में काला दिवस मनाया गया, जिसके बाद मैक जॉर्ज ने 08 मार्च 1876 को जगदलपुर में मुरिया दरबार का आयोजन करवाया।
- **भूमकाल विद्रोह (फरवरी 1910)**: इस विद्रोह का नेतृत्वकर्त्ता नेतानार के जमींदार वीर गुण्डाधुर के द्वारा किया गया। इस विद्रोह का उददेश्य स्थानीय जनता की उपेक्षा, शोषण, वनों के उपयोग एवं शराब बनाने पर प्रतिबंध का विरोध किया। इस विद्रोह का शुरूआत पुसपाल बाजार से किया गया। प्रतीक चिन्ह लाल मिर्च एवं आम की टहनी थी।

बस्तर के संघर्षों का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

बस्तर के जनजातीय संघर्ष केवल सशस्त्र विद्रोह तक सीमित नहीं थे, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और सामाजिक आंदोलन भी था। बस्तर के जनजातीय वीरों ने अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, लेकिन साथ ही उन्होंने अपनी पारंपरिक संस्कृति, भाषाएँ, और जीवनशैली को बनाए रखने के लिए भी संघर्ष किया। ब्रिटिश शासन के दौरान, आदिवासियों की संस्कृति और परंपराओं पर हमला किया गया था, और बस्तर के जनजातीय समुदायों ने अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए इस संघर्ष को जारी रखा।

इन संघर्षों ने बस्तर के जनजातीय समाज में राजनीतिक जागरूकता को जन्म दिया और उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपने अधिकारों की लड़ाई को साझा किया। इससे आदिवासी समाज के भीतर एकता और सामूहिक संघर्ष की भावना विकसित हुई, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक आंदोलन से जुड़ी रही।

निष्कर्ष

बस्तर के जनजातीय वीरों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उन्होंने केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष नहीं किया, बल्कि अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान की रक्षा के लिए भी निर्णायक भूमिका निभाई। उनके संघर्ष ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल शहरी वर्ग या बड़े नेताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि गांवों और आदिवासी क्षेत्रों में भी इसके अद्वितीय योगदान थे। बस्तर के जनजातीय वीरों की वीरता, संघर्षशीलता, और बलिदान को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा। उनके योगदान को न केवल इतिहास के पन्नों पर, बल्कि भारतीय समाज के दिलों में भी हमेशा सम्मानित किया जाएगा।

सुझाव

1. बस्तर के जनजातीय संघर्षों पर और अधिक शोध की आवश्यकता है ताकि इन वीरों की पूरी भूमिका को सामने लाया जा सके।
2. बस्तर के स्वतंत्रता संग्राम को शिक्षा, संस्कृति और पर्यटन के माध्यम से प्रचारित किया जा सकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसे जान सकें और प्रेरित हो सकें।
3. बस्तर के जनजातीय समुदायों की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी प्रयासों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. मिश्रा, अनिल कुमार एवं अंसारी, मो. शोएब (2018) *दण्डकारण्य,* अनाकार आनलाईन पब्लिकेशन्स जगदलपुर, बस्तर।
2. झा, के .के. (2013) *बस्तर और लोकनायक, प्रवीर चन्द्र भंजदेव और उनकी वंश परम्परा,* विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर।
3. ज्गदलपुरी, लाला (2012) *बस्तर लोक–कला–संस्कृति,* विश्वभारती प्रकाशन धनवटे चेम्बर्स, सीताबर्ड़ी, नागपुर।
4. सिंह, सत्य प्रकाश (2014) *आमचो बस्तर बस्तर संभाग सामान्य ज्ञान,* शिक्षादूत ग्रांथागार प्रकाशन, रायपुर।
5. गौड़, शरद चंद्र एवं गौड़ कविता (2010) *बस्तर एक खोज,* प्रथम संस्करण, प्रकाशक आर बी. सिंह विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर।
6. तिवारी, सुरेश (2011) *बस्तरः प्रर्यटन, इतिहास और संस्कृति,* विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, द्वितीय अवृत्ती।
7. Bsatar.gov.in, 2017, Accessed on 15/11/2025.

––==00==––